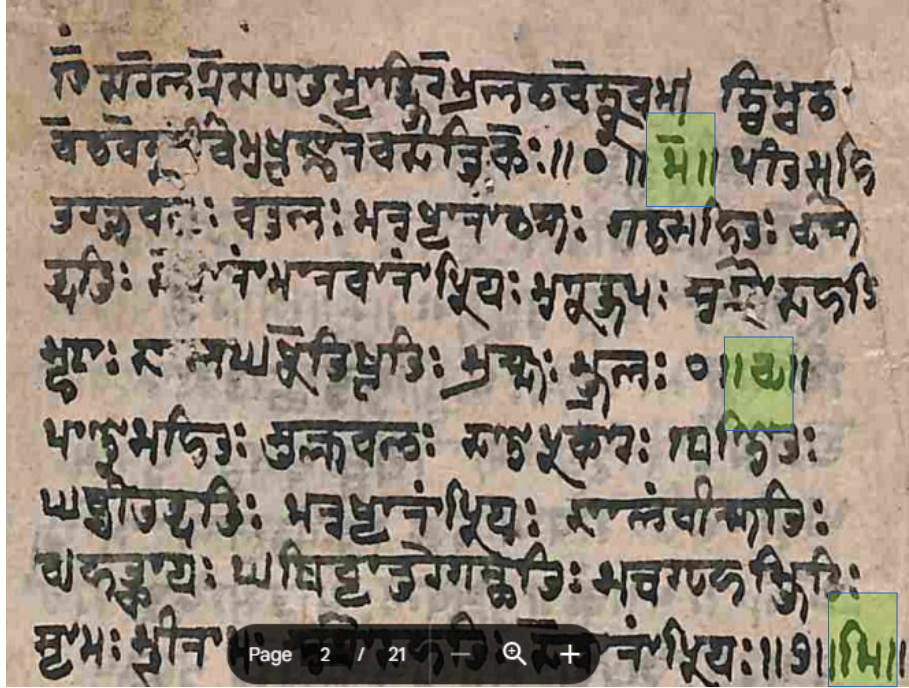
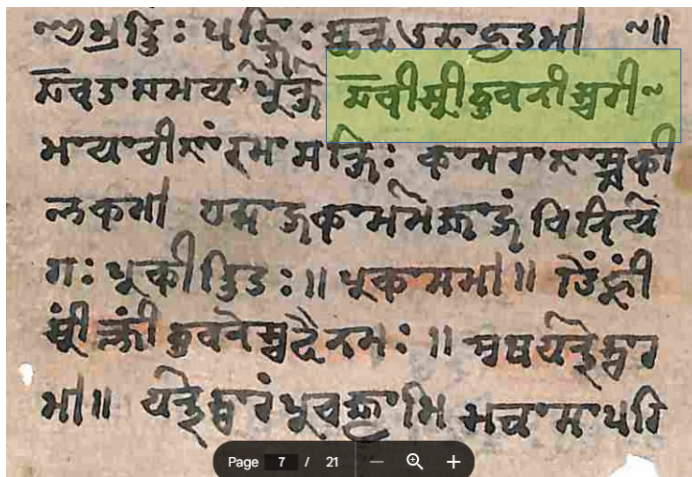


Title: Jyotisha Vichara -Devi Bhuvaneshvari Mantra-Avaahana Mantra-  
Devi Mahatmya (Markandeya Purana)

Jyotisha Vichara (12 Rashis)



Devi Bhuvaneshvari Mantra



## Avaahana Mantra

कलमभावादिष्टमिभमप्रभवेदिनेवुतः रङ्गपुष्प  
मभावात्तुष्टरिदभागाः रंसात्तुष्टिमयःकले  
वृक्षसादृशप्रयुक्तं ननवल रलिप्रभं ॥  
विश्ववदयुष्टदंरंगल्लसंभुप्रलिउभा मदेव  
विश्ववदयुष्टमवृक्षमवृक्षमा वृक्षल्लसंरंग  
लीप्रवृत्तमवृक्षवृत्तं रङ्गवृत्तं रलिप्रभं विभ  
मीरंगल्ल ॥ सुवः कभावात्तुष्टिमयःकले  
रमभावात्तुष्टिमयःकले सुवः कभावात्तुष्टिमयः  
सुवः सिधंल्ल

Page 8 / 21

## Devi Mahatmya (Markandeya Purana)

मिव चतुष्टयं यदंशं वसुभिर्दिविषयकभा  
मदकलेष्टुष्टमयः पञ्चमयःकलेष्टुष्टमयः  
लंल्लेष्टुष्टमयः पञ्चमयःकलेष्टुष्टमयः ॥  
ॐ तिस्रीष्टुष्टमयः पञ्चमयःकलेष्टुष्टमयः  
मदकलेष्टुष्टमयः पञ्चमयःकलेष्टुष्टमयः ॥ ॥ तिस्रीष्टुष्टमयः  
विश्ववदयुष्टमयः पञ्चमयःकलेष्टुष्टमयः  
मदकलेष्टुष्टमयः पञ्चमयःकलेष्टुष्टमयः ॥

Page 20 / 21





तिस्रो लोकेषु सप्त उभयदिग्भुजलठवेवुवभा विभुठ-  
 वेठवेवुवेवुधुधुनेवसेत्रिकेः॥०॥ मे॥ पतिभुदि  
 उज्ज्वलः वडलः भवधुनंठकः गहमदिउः वसे  
 यतिः सवनेभनवनं प्रियः भूजुपः सुमेरुदति  
 भूयः सत्यप्रतिधुतिः भूयः भुलः ०॥८॥  
 पदुभुदिउः सुकवलः सधुधुकरः पतिभुउः  
 पतिभुदिउः भवधुनं प्रियः सत्यवीमतिः  
 वरुधुयः पतिभुउगेगधुतिः भवगठधुतिः  
 सुभः भुनिभः सुमेरुदतिः सवनें प्रियः॥९॥ मि॥  
 पतिभुतिः सुभः पुनभः सत्यवीमयेग भ  
 पुगठः गेयभदिउः सवनें प्रियः वडलः वसे  
 धुतिः भूजुपः कमुमिरुभयेठवनि भगवः  
 भवधुनंठकः॥३॥ क॥ सुकवलः भूयः व

मयतिः सङ्ख्यकरः सङ्ख्यकरतिः भुङ्गुपः पयि  
 उः किंमिष्टुः सल्लेखेयं भुङ्गुपः भवग  
 कभयवत्तु मीतलः भुङ्गुः भुङ्गुपः भुङ्गुपः  
 भुङ्गुपः भुङ्गुपः भुङ्गुपः ॥ ५ ॥ भिं ॥ भुङ्गुपः  
 किंमिष्टुः सल्लेखेयं भुङ्गुपः भुङ्गुपः  
 यजस्रवत्तु भुङ्गुपः भुङ्गुपः भुङ्गुपः  
 भुङ्गुपः भुङ्गुपः भुङ्गुपः ॥ ५ ॥ भिं ॥ भुङ्गुपः  
 नंभयवत्तु भुङ्गुपः भुङ्गुपः भुङ्गुपः  
 भुङ्गुपः भुङ्गुपः भुङ्गुपः ॥ ५ ॥ भिं ॥ भुङ्गुपः  
 भुङ्गुपः भुङ्गुपः भुङ्गुपः ॥ ५ ॥ भिं ॥ भुङ्गुपः  
 भुङ्गुपः भुङ्गुपः भुङ्गुपः ॥ ५ ॥ भिं ॥ भुङ्गुपः

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative



सुक्ताभुगेकिपिबलः भवेधंनिडुपियः यष्टीर  
दतिः॥१॥ जे॥ वृभवलः एलंनवेकतः पुनभः  
सवन्नंभनवन्नंपियः यल्लुपः भुगडुः  
वकिरभवेरं भवेधं एलमएभिः यल्लुपः  
भवेधंपियः यष्टीरदतिः भवसंमनुमेरिपुः  
००॥भी॥

पीडवलः धीनभः गेपभक्तिः भुगडुः नम  
दतिः एललुगेउदतिः भवधुन्नंपियः  
सवन्नंभनवेगी भवधुन्नंठनीयः भवः  
भवधुपः किरीडुडुः कभुगिन्नुलमएभि  
तिः॥जे॥

विं न मे विप्र ॥ न मे कुवारी सुद भव मिहि  
 मयि ॥ मय वरुण गङ्गा ही भव न कुवारी  
 सुगीभा ॥ वरुण मये पियं सुद विनिगमिद  
 भालिगभा यम भव भव विदुं भव न  
 भिनिव सुगः यं सुद विदुं मयि गङ्गा  
 मय को वरुण यम भव भव ॥ वरुण  
 लेक धिग भवः यम भव भव भव न  
 सुद गङ्गा मयुक्तः गङ्गा मयं मिने मयं  
 मयं भव लभजिने वरुण सुद गङ्गा मयं  
 नमयः कुवारी सुगी ॥ मय वरुण मयि  
 विदुं भव भव भव भव भव भव भव  
 मय भव यं सुद भव भव भव भव  
 वरुण भवः भव भव भव भव ॥ ॥ ॥



CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

विष्णुमेवैव दत्तम् ॥ सुवदन्तं मुनिं वीर्यम्  
लेखयिष्यामीति वदन्तं मम सुहृदं यत्तु  
सन्निवेश्यते नृपस्य भद्रं भद्रं लिखेत् ॥

कलमभावाद्दयिष्यामि मम सुवदन्तं मुनिं वीर्यम्  
मम सुवदन्तं मुनिं वीर्यम् ॥ सुवदन्तं मुनिं वीर्यम्  
सुवदन्तं मुनिं वीर्यम् ॥ सुवदन्तं मुनिं वीर्यम्  
विष्णुमेवैव दत्तम् ॥ सुवदन्तं मुनिं वीर्यम्  
लेखयिष्यामीति वदन्तं मम सुहृदं यत्तु  
सन्निवेश्यते नृपस्य भद्रं भद्रं लिखेत् ॥



CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative



पालकनी उद्भूतमिदं मन्त्रं लालनं विदुः ॥ ३ ॥  
 वयं यन्मभीमं ननु ह्यविष्णुमेव स वयं  
 लपन्मन्त्रं देमविष्णुमिति मनमा ॥ सुव. व  
 इदं मन्त्रं पठि तिरवन्ममाहुः प्रवृत्तं  
 मिमिप्रलयेति पीतवल्क उद्भूतं ॥ सुव.  
 गजं वैष्णवं गन्तव्यं मक्तिरुन्तुतेष्टं यमयेष्टं  
 मिमिप्रलयेति गजव. सुविः मभिः ॥ सुव.  
 पद्मं गन्मदवल्क मदिधमन्महुः रुन्तु  
 रुन्तुष्टं नकुम रल्लव. यमेष्टं यम ॥ सुव.  
 नैव ह्युद्भूतं प्रलितं मन्त्रं पालनं मन्त्रं  
 मचमप्युक्तं पदमा नीलव. यन्ती ॥ सुव.  
 वल्कं याम्भं पठिमा याम्भं गन्तुतेष्टं यमि  
 रुन्तु मन्त्रं मनमा नीलव. उद्भूतं ॥ सुव.  
 वयं यन्मन्त्रं पालिमा रुन्तु मनमाहुः रुन्तु  
 सुव. मन्त्रं मन्त्रमा गजव. वयव. ॥ सुव. उ  
 वीरं गन्मन्त्रं यन्मन्त्रं मन्त्रं रुन्तु  
 मन्त्रं मन्त्रमा रल्लव. मेमेष्टं ॥ सुव. गन्मन्त्रं  
 इति लपन्मन्त्रं मन्त्रं रुन्तु मन्त्रं मन्त्रं  
 लिखितं मन्त्रं सुव. गन्मन्त्रं ॥ सुव. रुन्तु  
 मन्त्रं मन्त्रमा रुन्तु मन्त्रं रुन्तु मन्त्रं  
 मन्त्रमा गजव. रुन्तु ॥ सुव. मन्त्रं मन्त्रं

... ॥ ३॥ ... ॥ ४॥ ... ॥ ५॥ ... ॥ ६॥ ... ॥ ७॥ ... ॥ ८॥ ... ॥ ९॥ ... ॥ १०॥ ... ॥ ११॥ ... ॥ १२॥ ... ॥ १३॥ ... ॥ १४॥ ... ॥ १५॥ ... ॥ १६॥ ... ॥ १७॥ ... ॥ १८॥ ... ॥ १९॥ ... ॥ २०॥ ... ॥ २१॥ ... ॥ २२॥ ... ॥ २३॥ ... ॥ २४॥ ... ॥ २५॥ ... ॥ २६॥ ... ॥ २७॥ ... ॥ २८॥ ... ॥ २९॥ ... ॥ ३०॥ ... ॥ ३१॥ ... ॥ ३२॥ ... ॥ ३३॥ ... ॥ ३४॥ ... ॥ ३५॥ ... ॥ ३६॥ ... ॥ ३७॥ ... ॥ ३८॥ ... ॥ ३९॥ ... ॥ ४०॥ ... ॥ ४१॥ ... ॥ ४२॥ ... ॥ ४३॥ ... ॥ ४४॥ ... ॥ ४५॥ ... ॥ ४६॥ ... ॥ ४७॥ ... ॥ ४८॥ ... ॥ ४९॥ ... ॥ ५०॥ ... ॥ ५१॥ ... ॥ ५२॥ ... ॥ ५३॥ ... ॥ ५४॥ ... ॥ ५५॥ ... ॥ ५६॥ ... ॥ ५७॥ ... ॥ ५८॥ ... ॥ ५९॥ ... ॥ ६०॥ ... ॥ ६१॥ ... ॥ ६२॥ ... ॥ ६३॥ ... ॥ ६४॥ ... ॥ ६५॥ ... ॥ ६६॥ ... ॥ ६७॥ ... ॥ ६८॥ ... ॥ ६९॥ ... ॥ ७०॥ ... ॥ ७१॥ ... ॥ ७२॥ ... ॥ ७३॥ ... ॥ ७४॥ ... ॥ ७५॥ ... ॥ ७६॥ ... ॥ ७७॥ ... ॥ ७८॥ ... ॥ ७९॥ ... ॥ ८०॥ ... ॥ ८१॥ ... ॥ ८२॥ ... ॥ ८३॥ ... ॥ ८४॥ ... ॥ ८५॥ ... ॥ ८६॥ ... ॥ ८७॥ ... ॥ ८८॥ ... ॥ ८९॥ ... ॥ ९०॥ ... ॥ ९१॥ ... ॥ ९२॥ ... ॥ ९३॥ ... ॥ ९४॥ ... ॥ ९५॥ ... ॥ ९६॥ ... ॥ ९७॥ ... ॥ ९८॥ ... ॥ ९९॥ ... ॥ १००॥ ... ॥



भे॥ वेताल भंड ति परिगूढ उ मम  
 भेः मेरुं विरुति गिरिल उ वभा द  
 मदा उ ॥ ७ ॥ कले पमं दग ल के लि  
 धु पति उ नि । मरु नि प रु ध र मे  
 ग पि उ रु व नि ॥ पुल के ने न उ व के  
 भलि उ नि भा उ ग । ल भु र न प गिले भ ति रा ग ग  
 वि री सु री ल क्री सु उ प रु न दे र र प सु न क र उ र  
 नि उ प म मि न या उ भु ॥ उ भु म उ प म उ भु म उ प  
 म च ले क म दि ध ॥ ग रु उ र ग रु न नि उ प  
 म रु ने री ॥ मे म ॥ उ सु गी म च उ उ न उ नि दि ध  
 रु ये सी य मा । श्री उ पि न य म ॥ उ उ रु उ र व म  
 न सु वि रु ग भि उ उ र म ॥ उ रु उ उ म न ल क्री  
 म दि ध उ र प उ नी ॥ श्री रु रु व म ॥ वि य उ म भि  
 उ म य व म रु क न ल प उ म रु म भि रु उ रु म पि उ व म  
 उ व मी रु उ ॥ श्री रु व रु व म ॥ य दि रु म भि रु दि  
 वि व रु रु क म ॥ म म न ॥ रु रु व वि म रु रु ति म रु मे  
 मु द प म भि वि कि रु रु रु वि रु उ रु क म भि रु  
 रु उ म य रु म रु म रु उ रु व म रु रु रु यि नी ॥





भृष्टो॥५०॥ भनक्ति कभलेविष्टः  
 भ्रुतेवृद्धाधरणपतिः॥५१॥ उव  
 भुगेपेगेधुमपुंग एनानुनमा॥५०  
 ॥ उध्वयेगनिमंताभक्तगुह्य  
 यभ्रुतः॥ विचेणनऊयदग्दग्नि  
 नेरुतालयाभा॥५१॥ विसेसुंगी  
 एगमूतीभ्रुतिमंदगकगिली  
 ॥५॥ भुगेमिनिमंरुगवतीविष्टेगु  
 लउएभः॥५३॥ वृद्धिवाग॥ उंभ  
 दंभुणदंदि वधएगभुणत्रिक  
 ॥ भुणदभक्तनिट्टिणिभाउति  
 कभ्रुता॥५२॥ मचभाउभ्रुता  
 निट्टियागभुदविमेषतः॥ उंभ  
 वभक्तभगविशीदंदि एननीपर  
 ॥५५॥ इयैउमूदउविमंइयैउ  
 एउएगउ॥ इयैउमूदउवि



CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative



८॥ सदा भगवतः सितं यदुभय  
 विभविनी ॥ ३॥ श्रीदेववा ॥ २॥  
 एकैवाङ्गणगु इति गीया कम्  
 भापरा ॥ पसुता सुसुमयुव वि  
 सदा सितं उयः ॥ ५॥ उतः मम  
 मुमुमे ह ॥ बुद्धा ली प्रभापाल  
 यम ॥ उता देवा मुनी एगमु के  
 वाभी उता भिक ॥ ७॥ श्रीदेववा  
 ॥ १॥ सदा विरुता ररुति रिदुत  
 येदम भित्ता ॥ उतं हतं भये कैव  
 डिष्टु भुष्टि भिगेठव ॥ ३॥ एधि  
 वास ॥ ७॥ उतः प्रदत्तं यदुभय  
 हः ममुमुमेठये ॥ पसुतां भव  
 देवा न भु मुगलं य म न लभा  
 ०॥ सदा वदेः सितैः सभुमुषा मु  
 सैव म न लेः ॥ उतैर्युमुभयः

मंदिरः

मचलेकठय ॥ ०० ॥ मिष्टु  
 भुलि, सतमे भुलि, यातु वाभिक  
 चठान्, उानि मे ॥ ०१ ॥ भुलि, यातु  
 कठुठिः ॥ ०२ ॥ भुलि, यातु  
 लि, मिष्टु नि, पम सुगी ॥ चठान्,  
 लीलये, वीग ॥ ०३ ॥ भुलि, यातु  
 ठिः ॥ ०४ ॥ उतः, सर सतः, मेवी  
 भासु, मयत, मेभरः ॥ भापि, उतुपि  
 उ, मेवी, पत्रसि, सुम, सुभुठिः ॥ ०५ ॥  
 मित्र, पत्रधि, मे ॥ ०६ ॥ भुलि, यातु  
 भासु ॥ मिष्टु, मेवी, सतु ॥ उ,  
 भुलि, यातु, भुलि, यातु ॥ ०७ ॥ उतः,  
 पत्र, भुलि, यातु, सत, सत, सत  
 उभत ॥ ०८ ॥ भुलि, यातु, उ, मेवी, मे  
 न, भुलि, यातु, सुगः ॥ ०९ ॥ उभ, पतुत,  
 पत्र, सु, पत्र, मिष्टु, म, सुभुठिः ॥

५

न  
 भा  
 ५७



CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative



CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative



[illegible]



